कारण बतलाते हैं। सुल्तान को केवल अपने दरबारियों को दौलताबाद ले जाना चाहिए था, न कि जनता को। आम जनता अपने पैतृक घरों को छोड़कर अनजाने - अनजान जगह पर विवश होकर गई थी जिस कारण उनमें रोष था। सुल्तान का यह सोचना भी भूल थी कि दौलताबाद एक उपयुक्त राजधानी होगी। मंगोलों के आक्रमणों से सुरक्षा के लिये और उत्तर-भारत के पूर्ण संगठित राज्य की सुरक्षा तथा व्यवस्था के लिये दिल्ली अधिक उपयुक्त स्थान था। अव्यवस्थित दक्षिण-भारत की तुलना में संगठित उत्तर-भारत दिल्ली सल्तनत के लिये अधिक महत्वपूर्ण था।

(5) सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन (1329-30ई०) — मुहम्मद बिन तुगलक ने अपने समय में विभिन्न प्रकार के सुन्दर सिक्के चलाये और इन सभी का उचित मूल्य निश्चित किया परन्तु सांकेतिक मुद्रा का चलाना उसकी एक विशिष्टता रही। बरनी के कथनानुसार खजाने में धन की कमी और साम्राज्य विस्तार की नीति को कार्य-रूप में परिणत करने की वजह से मुहम्मद बिन तुगलक को सांकेतिक मुद्रा चलानी पड़ी। ईरान में कैखातू खाँ के समय में सांकेतिक मुद्रा चलायी गई थी यद्यपि वहाँ यह प्रयोग असफल हुआ था। परन्तु चीन में कुबलाई खाँ के समय में सांकेतिक मुद्रा का प्रयोग सफलतापूर्वक किया गया था। सम्भवतया नवीन अन्वेषणों का प्रयोग करने वाले मुहम्मद बिन तुगलक ने उन देशों से प्रेरणा प्राप्त की। परन्तु सुल्तान की यह योजना भी असफल हो गयी। सुल्तान ने सांकेतिक मुद्रा के नकल न किये जाने की व्यवस्था नहीं की। और नागरिकों ने इसका लाभ उठाकर नकली सिक्के बनाने आरम्भ कर दिये। प्रजा ने पीतल और तांबे के सिक्कों में कर और लगान दिया तथा अपने घर में चाँदी व सोने के सिक्के एकत्र करना आरम्भ कर दिया। जिसके कारण आन्तरिक और बाह्य व्यापार को काफी नुकसान पहुँचा। ये सिक्के अधिकतम चार साल चले। सुल्तान ने इस योजना की असफलता को देखकर सरकारी टकसाल द्वारा की गई सभी सांकेतिक मुद्रा को वापस ले लिया और नागरिकों को उनके बदले में चाँदी और सोने के सिक्के दे दिये। इससे राज्य की स्थिति दुर्बल हो गयी। इस प्रकार मुहम्मद बिन तुगलक अपनी सभी योजनाओं में असफल रहा।

भेजा। कुराचिल क्षेत्र को जीत लिया गया। पहाड़ी शासक ने सुल्तान की अधीनता को स्वीकार कर वार्षिक कर देना भी स्वीकार कर लिया। किन्तु इस अभियान से सुल्तान की सेना को काफी नुकसान पहुँचा। पहाड़ी क्षेत्र में ठंड एवं अन्य अनजान परिस्थितियों के कारण पूरी सेना लगभग समाप्त हो गई और लगभग 10 की संख्या के करीब ही सेना बची।

4. दक्षिण-भारत — अपने पिता के शासन काल के दरम्यान ही मुहम्मद-बिन-तुगलक ने तेलंगाना और सुदूर-दक्षिण में मालाबार-तट (पाण्ड्य राज्य) के अधिकांश भाग पर अधिकार कर चुका था। अपने शासन के दौरान बहाउद्दीन गुर्शस्प ने विद्रोह करके उसे दक्षिण के अन्य भागों को विजय करने का अवसर दे दिया। बहाउद्दीन गुर्शस्प को दक्षिण भारत के होयसल वंशीय सुल्तान वीर ~~बल्लाल~~ बल्लाल ने शरण दे रखी थी। किन्तु सुल्तान के द्वारा आक्रमण किये जाने पर उसने गुर्शस्प को सुल्तान को समर्पित कर दिया तथा स्वयं अधीनता स्वीकार कर ली। सुल्तान ने इस अवसर पर द्वारसमुद्र के अधिकांश भाग को जीत लिया। इसके अलावा कोंकण की विजय तुगलक सुल्तान की एक अन्य विजय थी। इस प्रकार दक्षिण के कुछ भागों को छोड़कर शेष सभी प्रदेशों पर मुहम्मद बिन तुगलक का अधिकार हो गया।

5. राजस्थान — केवल राजस्थान में मुहम्मद बिन तुगलक को सफलता नहीं मिली। राणा हम्मीरदेव ने मुहम्मद तुगलक द्वारा भेजी गयी एक सेना को पराश्त करने में सफलता प्राप्त की। उसके पश्चात् दिल्ली के सुल्तानों ने राजस्थान में अधिक हस्तक्षेप नहीं किया।

इस प्रकार दिल्ली के सुल्तानों में सबसे बड़ा राज्य उसी का था। कश्मीर, उड़ीसा, राजस्थान और मालाबार तट को छोड़कर शेष भारत उसके साम्राज्य की सीमा के अन्तर्गत थे किन्तु सुल्तान की यह सफलता स्थायी नहीं रह सकी और केवल 10 वर्षों के भीतर असंतोष के वातावरण में विद्रोह की ऐसी श्रृंखला ~~उभरी~~ उभरी जिसने साम्राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया और अन्ततः उसके शासन के अंतिम समय में उसके पास वही क्षेत्र बचे जो किसी समय में अलाउद्दीन खलजी को पैतृक रूप से प्राप्त हुए थे।

मुहम्मद बिन तुगलक ने विदेशी राज्यों के साथ भी संबंध स्थापित किया था। मिस्र के शासक के साथ उसके राजनीतिक सम्बन्ध थे 1341 ई० में

वहाँ सूखा और अकाल पड़ा था अतएव किसानों ने कृषि को छोड़कर चोरी-डकैती का पेशा अपना लिया। लगान अधिकारियों ने कठोरता के साथ कर वसूल किया जिसके परिणाम स्वरूप विभिन्न स्थानों पर विद्रोह हुए। सुल्तान ने कठोरता पूर्वक इस विद्रोह का दमन किया। डॉ० ए०एल० श्रीवास्तव के अनुसार बाद में सुल्तान ने किसानों को बीज, बैल, आदि दिये तथा सिंचाई के लिये कुएँ और नहरें खुदवाई परन्तु उनसे कोई लाभ नहीं हुआ क्योंकि ये सहायता कार्य काफी देर से किये गये।

③ कृषि की उन्नति का प्रयत्न — मुहम्मद बिन तुगलक ने कृषि की उन्नति के लिये एक नवीन विभाग खोला और एक नया मंत्री 'अमीर-ए-कोही' नियुक्त किया। राज्य की ओर से साधी आर्थिक सहायता देकर कृषि के योग्य भूमि का विस्तार करना इस विभाग का मुख्य उद्देश्य था। सल्तनत युग में भारत के लिये यह पहला अवसर था जब सल्तनत ने कृषि-सुधार पर न केवल बल दिया वरन् सरकारी खजाने से एक लम्बी रकम भी खर्च की। परन्तु यह योजना सफल नहीं हो सकी। सरकारी कर्मचारियों के भ्रष्टाचार, किसानों की उदासीनता, भूमि का अच्छा न होना और समय की कमी इस योजना की असफलता का कारण बना। तीन वर्ष के पश्चात् इस योजना को त्याग दिया गया।

④ राजधानी परिवर्तन (1326-27ई०) — मुहम्मद बिन तुगलक ने दिल्ली के स्थान पर देवगिरि को राजधानी बनाया। इसके कई कारण थे जैसे — देवगिरि का साम्राज्य के केन्द्र में होना, उत्तर-भारत की अपेक्षा दक्षिण-भारत के शासन और संगठन पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता, मंगोल-आक्रमणों से सुरक्षा अथवा उनके आक्रमणों के भय का कम हो जाना, दक्षिण-भारत की समृद्धि का लालच और वहाँ पर मुस्लिम संस्कृति को स्थापित करने की लालसा। अन्ततः मुहम्मद बिन तुगलक ने जनता को देवगिरि जाने का आदेश दिया और देवगिरि का नाम दौलताबाद रखा। मार्ग में सुल्तान ने जनता की सुविधा के लिये घने छायादार वृक्ष लगवाये, नागरिकों के खाने-पीने की समुचित व्यवस्था की गई। सभी जाने वाले नागरिकों को अपनी छोड़ी गई सम्पत्ति का मुआवजा दिया गया। फिर भी सुल्तान की यह योजना विफल हो गई। इतिहासकारों ने इसकी असफलता के कई

चीन के सम्राट तोगन तिमूर ने अपना एक राजदूत मुहम्मद बिन तुगलक के दरबार में भेजा था बदले में 1342 ई० में मुहम्मद बिन तुगलक ने इब्नबतूता को अपना दूत बनाकर चीनी सम्राट के दरबार में भेजा।

विद्रोह और साम्राज्य विघटन — मुहम्मद बिन तुगलक के समय में सबसे अधिक चौंतीस विद्रोह हुए जिनमें से सत्ताईस विद्रोह अकेले दक्षिण भारत में हुए इनमें से कुछ विद्रोह सफल हुआ जो साम्राज्य के विघटन में सहायक बना।

① 1326-27 ई० में उसके चचा के पुत्र गुलबर्गा के निकट सागर के जागीदार बहाउद्दीन गुर्शस्प ने विद्रोह कर दिया किन्तु वह पराजित हुआ।

② 1327-28 ई० में उच्च, सिन्ध, और मुल्तान के सूबेदार बहराम आईबा उर्फ किश्लू खाँ ने विद्रोह कर दिया किन्तु वह भी पराजित हुआ।

③ 1327-28 ई० में बंगाल में गियासुद्दीन बहादुर ने विद्रोह कर दिया। किन्तु सेनानायक बहराम खाँ ने उसे पराजित कर दिया। आगे चलकर मुहम्मद बिन तुगलक बंगाल पर ध्यान न दे सका और वहाँ ~~सुल्तान~~ शमसुद्दीन का स्वतन्त्र राज्य स्थापित हो गया।

⑤ सुनाम, समाना, कड़ा, बीदर, गुलबर्गा, अवध, मुल्तान में भी विद्रोह हुए किन्तु उन्हें दबा दिया गया।

⑥ 1334-35 में मदुरा के सूबेदार अहसान शाह ने विद्रोह कर दिया और मदुरा में एक स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की।

⑦ इसी समय हिन्दुओं ने तेलंगाना और कोची में स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया। 1336 ई० में हरीहर तथा बुक्का ने दक्षिण में विजयनगर राज्य की नींव डाली।

⑧ गुजरात क्षेत्र में अबुल मुजफ्फर अलाउद्दीन बहमन शाह ने स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की।

⑨ गुजरात क्षेत्र से भागकर विद्रोही नागी खाँ सिन्ध क्षेत्र पहुँचा। वहाँ भी सुल्तान ने नागी खाँ का पीछा किया। अन्ततः सिन्ध में ही मुहम्मद बिन तुगलक बीमार हो गया और 1351 ई० में थट्टा के सैन्य शिविर में वह गुजर गया।

प्रथा को स्वीकार करने के लिये तत्पर नहीं था। न्याय व्यवस्था पर उलेमा वर्ग के आधिपत्य को समाप्त कर उसने आम आदमी को भी काजी का पद प्रदान किया। उसने धार्मिक वर्ग का भी राज्य के विरुद्ध विद्रोह करने तथा बेइमानी करने पर दण्डित किया। इस कारण मुसलमान धार्मिक वर्ग मुहम्मद तुगलक का विरोधी हो गया। जिसके कारण मुहम्मद बिन तुगलक ने बाद में चलकर इस वर्ग से समझौता कर लिया। उसने अब सिक्कों पर खलीफा का नाम अंकित कराया। अपने सुल्तान पद की स्वीकृति के लिये प्रार्थना की। मुहम्मद बिन तुगलक ने सभी योग्य व्यक्तियों के लिये शाही सेवा के दरवाजे खोल दिये। इस क्षेत्र में भी वह दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने हिन्दुओं को ही नहीं बल्कि विभिन्न निम्न कुलों एवं जातियों के व्यक्तियों को राज्य में उच्च पद प्रदान किये। मुहम्मद बिन तुगलक ने अपने बहुसंख्यक हिन्दू प्रजा के साथ सहिष्णुता का व्यवहार किया। उसने योग्यता के आधार पर राज्य के अनेक पदों को हिन्दू तथा मुसलमानों, अमीरों तथा विदेशियों के बीच समान रूप से बाँटा।

आन्तरिक शासन: विभिन्न योजनायें (प्रशासनिक परिवर्तन)

मुहम्मद बिन तुगलक नवीन प्रयोग करने वाला एक महत्वाकांक्षी सुल्तान था। उसने अपनी सोच के अनुरूप ही आन्तरिक शासन को मोड़ने का प्रयत्न किया। जिसके अन्तर्गत उसने नवीन योजनाओं को जन्म दिया। जो इस प्रकार है:-

① राजस्व सुधार — मुहम्मद बिन तुगलक ने राजस्व-व्यवस्था में सुधार करने के लिये अनेक कानून बनाये। सर्वप्रथम उसने सूबों की आय-व्यय का हिसाब रखने के लिये एक रजिस्टर तैयार कराया। और सभी सूबेदारों को इस सम्बन्ध में अपने-अपने सूबों का हिसाब भेजने के आदेश दिये। उसका उद्देश्य था कि साम्राज्य के सभी प्रदेशों में समान लगान व्यवस्था लागू की जाये। जिससे कोई भी गाँव लगान देने से मुक्त न रहे।

② दोआब में कर-वृद्धि (1325-27) — अपने शासन के आरम्भ में मुहम्मद बिन तुगलक ने दोआब में कर-वृद्धि की। कर की दर क्या थी इसे लेकर विभिन्न इतिहासकारों के अलग-अलग मत हैं फिर भी यह वास्तविकता है कि जिस समय कर-वृद्धि की गई उस समय

मंगोल आक्रमण — मुहम्मद बिन तुगलक के समय में मंगोलों का केवल एक आक्रमण हुआ। 1328-29 ई० में ट्रान्स-ऑक्सियाना के मंगोल नेता अलाउद्दीव तार्माशरीव ने एक बड़ी सेना लेकर भारत पर आक्रमण किया तथा मेरठ तक आ पहुँचा। किन्तु सुल्तान ने उसे 5,000 दीनार की राशी देकर वापस भेज दिया।

साम्राज्य विस्तार — मुहम्मद बिन तुगलक के समय में दिल्ली-सल्तनत का सबसे अधिक विस्तार हुआ। इसामी के अनुसार मंगोलों के वापस चले जाने के मुहम्मद बिन तुगलक ने पेशावर और कलनूर को अपने आधिपत्य में ले लिया।

1. खुरासान तथा इराक की विजय-योजना — मंगोलों के वापस चले जाने के पश्चात् सुल्तान ने खुरासान तथा इराक को जीतने की योजना बनाई और इसके लिये उसने प्रायः 3,70,000 सैनिकों की एक बड़ी सेना एकत्र की तथा उसे एक वर्ष का अग्रीम वेतन भी दिया। मध्य एशिया (फिर) और ईरान की अव्यवस्थित स्थिति और सुल्तान के दबाव में इराक एवं खुरासान से भागकर आये हुए अमीरों का प्रोत्साहन इस योजना के निर्माण का कारण बना था। परन्तु यह योजना कार्यरूप में परिणत न हो सका और सुल्तान ने उसे स्थगित कर दिया। लम्बे अरसे तक युद्ध को टाले रखकर सैनिकों को वेतन देने से राज्य की आर्थिक स्थिति दुर्बल हो गयी। और फिर सेना को भंग किये जाने पर सैनिकों में असंतोष व्याप्त हो गया।

2. नागकोट की विजय (1337 ई०) — पंजाब के कांगड़ा जिले में स्थित नागकोट का किला एक हिन्दू राजा के अधीन था। उस समय तक किसी भी मुसलमान शासक ने उसे विजय नहीं किया था। मुहम्मद तुगलक ने उसे जीत लिया परन्तु अपनी अधीनता को स्वीकार कराने के पश्चात् उसे वहीं के राजा को वापस कर दिया।

3. कुराचिल पर आक्रमण (1337-38 ई०) — कुराचिल का क्षेत्र हिमाचल की तराई में स्थित आधुनिक कुमाऊँ जिले में था। सुल्तान के द्वारा इस क्षेत्र पर आक्रमण करने के पीछे का मुख्य कारण पहाड़ी शासक के द्वारा सल्तनत के विरोधियों को शरण देना था। सुल्तान ने एकलाख घुड़सवारों की विशाल सेना को इस अभियान के लिये

मुहम्मद बिन तुगलक

असि० प्रो० डॉ० संदीप कुमार
इतिहास विभाग
बी०एम० कॉलेज, रहिका, मधुबनी
मो० -8051796740
दिनां

मुहम्मद बिन तुगलक – 1325 – 1351 ई०

अपने पिता गियासुद्दीन तुगलक की मृत्यु के बाद उलुग खाँ ने स्वयं को दिल्ली सल्तनत का सुल्तान घोषित किया था। प्रारम्भ वह अपना राज्याभिषेक तुगलकाबाद में ही किया और मुहम्मद बिन तुगलक की उपाधि ग्रहण की। 40 दिन तक तुगलकाबाद में रहने के पश्चात् अनुकूल एवं शांत माहौल को देखकर दिल्ली में प्रवेश किया और अपने पैतृक सल्तनत के सिंहासन पर बैठा। जनता ने उसका कोई विरोध नहीं किया। मुहम्मद बिन तुगलक ने पैतृक रूप से जिस साम्राज्य को प्राप्त किया वह 23 प्रान्तों में बँटा हुआ था। कश्मीर तथा बलुचिस्तान को छोड़कर लगभग सारा हिन्दुस्तान दिल्ली सल्तनत के नियंत्रण में था। मुहम्मद बिन तुगलक अरबी-फारसी का महान विद्वान तथा ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न विधाओं जैसे खगोलशास्त्र, दर्शन, गणित, चिकित्सा, विज्ञान, तर्क-शास्त्र आदि में पारंगत था। मुहम्मद बिन तुगलक की महत्वाकांक्षायें और योजनायें तथा उसकी सफलता अथवा असफलता प्रत्येक प्रकार से आकर्षक और आश्चर्यजनक है

राजत्व सिद्धान्त एवं ~~धार्मिक~~ धार्मिक विचार

मुहम्मद बिन तुगलक का राजत्व-सिद्धान्त दैवी सिद्धान्त की भाँति था। उसका विश्वास था कि सुल्तान बनना ईश्वर की इच्छा है। उसने अपने सिक्कों पर 'अल सुल्तान जिल्ली अल्लाह' (सुल्तान ईश्वर की छाया है), ईश्वर सुल्तान का समर्थक है आदि वाक्यों को अंकित कराया था। उसका विश्वास सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न सुल्तान में था। अलाउद्दीन खलजी की ही भाँति मुहम्मद बिन तुगलक भी शासन में किसी भी व्यक्ति अथवा वर्ग के हस्तक्षेप को पसन्द नहीं करता था। उसके मंत्री एवं अन्य अधिकारी उसके सलाहकार मात्र थे किसी को भी उसके शासन-सत्ता में भाग लेने का अधिकार नहीं था। मुहम्मद बिन तुगलक ने उलेमा वर्ग को भी शासन में हस्तक्षेप नहीं करने दिया। अपने आरम्भिक काल में उसने न तो अपने सुल्तान के पद के लिये खलीफा से स्वीकृति ली और न ही अपने सिक्कों पर किसी खलीफा का नाम अंकित करवाया। उसका अभिप्राय इस्लाम और इस्लाम धर्म के कानूनों की उपेक्षा करना नहीं था परन्तु वह शासन में धर्म अथवा धार्मिक वर्ग के